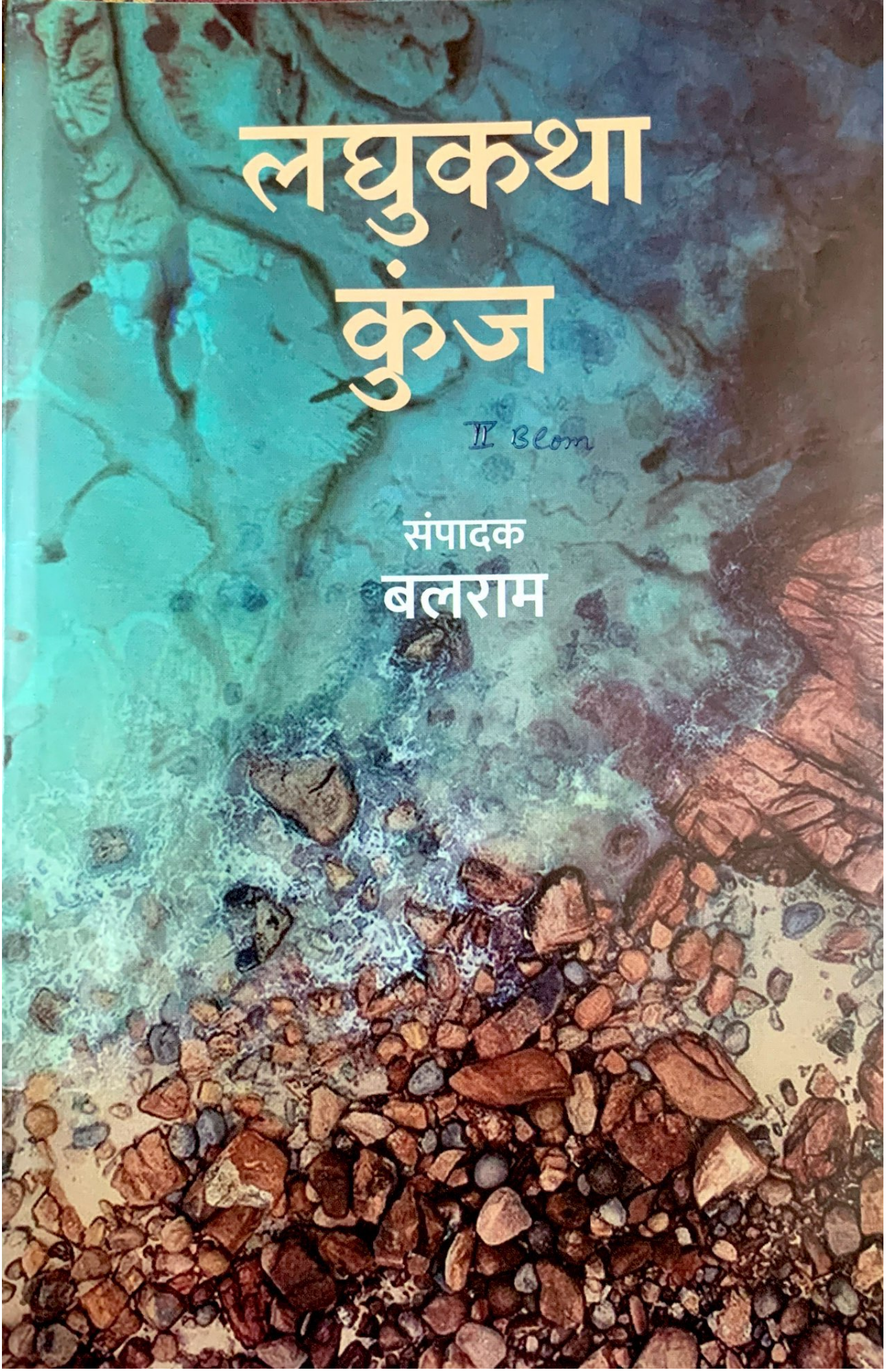

Scanned with CamScanner

मधुदीप

ऐसे

रात के गहराते अंधकार में दो मित्र पार्क की सुनसान बेंच पर गुमसुम बैठे थे। इससे पूर्व वे काफी देर तक बहस में उलझे रहे थे। इस बात पर तो दोनों सहमत थे कि इस दुनिया में जिया नहीं जा सकता, इसलिए मरना बेहतर होगा। मगर मरें कैसे? काफी विचारने के बाद भी दोनों को आत्महत्या का कोई ढंग उपयुक्त नहीं लगा था।

"सुनो...।" एक ने खामोशी तोड़ी।

"हूं..."

"मेरी मानोगे?"

"क्या?"

"क्यों न हम जिंदगी से लड़कर मरें!"

कुछ देर बाद दोनों मजबूती से एक-दूसरे का हाथ थामे बढ़े जा रहे थे।

नियति

"ऐ...ऐ...झल्ली..." टाई की नॉट कसते हुए पैंट वाले बाबू ने पुकारा।

"हां बाबूजी!" झल्ली को सिर से उतार, वह अधनंगा आदमी ठहर गया।

"यह देशी घी का पीपा फरासखाने ले जाना है। बोल कितने पैसे लेगा?"

"दे देना। बाबूजी!" कहकर उसने पीपा सिर पर उठा लिया था।

मकान की दूसरी मंजिल चढ़ते हुए झल्ली वाला हांफने लगा था। उसे पछतावा हो रहा था—न जाने बाबू कितने पैसे दे...! एकक्षण रुककर वह सांस लेने लगा।

Scanned with CamScanner

''देशी घी का है। क्यों, दम फुला रहा है? बस, एक मंजिल और चढ़ना है।'' बाबू ने झल्लाकर कहा। झल्ली वाले को क्रोध तो बहुत आया पर उसके सिर पर बोझ था। ऊपर पहुंचा तो पीपा उतारकर उसने घड़ी भर राहत लेनी चाही, तभी बाबू ने उसकी ओर मैली-सी अठन्नी बढ़ायी।

''बस, अठन्नी बाबूजी? तीन तो जीने चढ़े हैं!''

''और क्या पांच रुपये होंगे? लेने हों तो ले, नहीं तो रास्ता नाप। हूं—!'' बाबू अपने घर में घुसकर गुर्राया। एक बार तो झल्ली वाले का मन हुआ कि वह अठन्नी को फेंक दे, लेकिन उसके हाथ ऐसा न कर सके।

''साले! खाएंगे देशी घी। पीपे में घी क्या गोबर भरा होगा? देशी घी खाने वाले क्या...।'' बड़बड़ाता हुआ वह जीना उतरने लगा।

चैट कथा

रीमा ने दो घंटे पहले ही फेसबुक पर अपनी नई फोटो पोस्ट की थी। अब तक दो सौ लाइक्स, तीस कमेंट्स और शेयर आ चुके हैं। वह रोमांचित है।

''हाय सैक्सी।'' फेसबुक पर चैट बॉक्स खुलता है।

''हाय रैम! कैसे हो?''

''बड़ी धांसू फोटो पोस्ट की है।''

''यू लाइक दैट?''

''ओह यस, सुपर्ब।''

''थैंक्स ए लॉट।''

''तुम बहुत क्यूट हो।''

''सच, मैं कैसे मान लूं?''

''मैं तीन महीने से तुमसे चैट कर रहा हूं।''

''चैट कर रहे हो या चीट कर रहे हो?''

''व्हाट?''

''तुम, तुम ही हो, मैं कैसे मान लूं?''

''जैसे मैं मानता हूं कि तुम, तुम ही हो।''

''बहुत स्मार्ट हो।''

''थैंक्स फॉर कम्पलीमेंट। कब मिल रही हो?''

''फॉर व्हाट, किसलिए?''

Scanned with CamScanner

''तुम्हें प्रोपोज करना है।''

''शिट, कर दिया न चैट का रोमान्स खत्म।''

हिस्से का दूध

उनींदी आंखों को मलती हुई वह अपने पति के करीब आकर बैठ गयी। वह दीवार का सहारा लिए बीड़ी के कश ले रहा था।

''सो गया मुन्ना... ?''

''जी! लो दूध पी लो।'' सिल्वर का पुराना गिलास उसने बढ़ाया।

''नहीं, मुन्ने के लिये रख दो। उठेगा तो...।'' वह गिलास को माप रहा था।

''मैं उसे अपना दूध पिला दूंगी।'' वह आश्वस्त थी।

''पगली, बीड़ी के ऊपर दूध-चाय नहीं पीते। तू पी ले।'' उसने बहाना बनाकर दूध को उसके और करीब कर दिया।

तभी—

बाहर से हवा के साथ एक स्वर उसके कानों से टकराया। उसकी आंखें कुर्ते की खाली जेब में घुस गईं।

''सुनो, जरा चाय रख देना।''

पत्नी से कहते हुए उसका गला बैठ गया।

❑

मधुदीप का जन्म 1 मई, 1950 को दुजाना (हरियाणा) में हुआ। 'समय का पहिया' और 'मेरी बात तेरी बात' (लघुकथा संग्रह) के साथ एक कहानी संग्रह और छह उपन्यास प्रकाशित। 'पड़ाव और पड़ताल' के दो दर्जन से अधिक संचयनों में हिंदी के ज्यादातर लघुकथा लेखकों की रचनाएं देते हुए उन पर आलोचना का अविस्मरणीय काम किया। कई संस्थाओं से पुरस्कार और सम्मान हासिल।

Scanned with CamScanner

चेतना भाटी

राक्षस

दादी माँ कहानी सुना रही थीं, ''ऋषि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास आए और राजकुमारों को उनकी सहायतार्थ भेजने का अनुग्रह करते हुए अपनी व्यथा बताने लगे, ''राक्षस उत्पात मचाते रहते हैं, हमारी साधना और शांति भंग करते हैं। हवन कुंड में नर मुंड डालकर पवित्र वातावरण को दूषित करते हैं।''

''हाँ-हाँ, मैंने देखा था टीवी पर, वे नियंत्रण रेखा पार कर घुसपैठ करते हैं।'' चिंटू तपाक से बोल पड़ा।

''और हमारे राजकुमार भी तो किस बहादुरी से डटे हुए हैं मोर्चे पर, उन्हें खदेड़ने में अपनी जान की परवाह किए बगैर।'' दादी माँ ने गहरी सांस ली। प्लेन से उतरते पेटी बंद शहीदों का दृश्य उनकी आंखों में घूम गया और वे नम हो गईं।

सुनामी सड़क

नटखट नन्हे को सुलाने की असफल कोशिश करते उसने पाया, ''बचाओ—बचाओ'' का शोर है चहुँओर। सैकड़ों वृक्ष ढह गए, हजारों आशियाने उजड़ गए। शहर से बदहवास उड़ती आती चिड़िया से उसकी देहातन सखी ने पूछा, ''का सखी सुनामी?''

''ना सखी, सड़क।'' बेहोश होकर लुढ़कने के पहले हाँफ ते हुए वह बोली थी।

Scanned with CamScanner

देहातन ने झट घबराकर बच्चे को सीने से लगाया, "बेटा, सो जा, नहीं तो सड़क आ जाएगी।" सहमा बच्चा सिकुड़कर सो गया।

सड़क चौड़ीकरण ने सब कुछ समेट लिया था।

ऊँची जात

वह प्रतिदिन बंगले के सामने की सड़क पर झाड़ू लगाती। बंगले का आँगन—गैरेज झाड़ती। उनके पालतू कुत्तों द्वारा की गई गंदगी साफ करती। बंगले के पिछवाड़े गाय—भैसों के बाड़े में पड़ा गोबर उठाती। नाली की सफाई करती और बंगले के सभी प्रसाधन कक्ष धोकर चमकाती। उस दिन भी वह आई, प्रतिदिन का कार्य किया और एक ओर खड़ी हो गई। आज उसके वेतन का दिन था। मालकिन घर से बाहर निकली। उसने दोनों हथेलियां जोड़कर अंजुरी बनाकर मालकिन के सामने फैला दी। मालकिन ने थोड़ा बचते हुए, हाथ ऊपर करके उसकी अंजुरी में नोट टपका दिया, जैसे भिखारी को भीख दे रही हो। उनके विदेशी गेस्ट ने यह सब देखा और द्विभाषिए के माध्यम से पूछा—"रुपए इस तरह क्यों दिए गए?"

"क्योंकि वह अस्पृश्य है, नीची जाति की है।"—द्विभाषिए ने बताया।

"नीची जाति की क्यों है?"—विदेशी मेहमान ने भोलेपन से प्रश्न किया।

"क्योंकि वह नीचा काम करती है। गंदगी उठाती है। सफाई करती है।" —द्विभाषिए ने व्याख्या दी।

"तो क्या गंदगी फैलाना ऊँचा काम होता है आपके यहाँ? जो गंदगी फैलाते हैं ऊँची जाति के कहलाते हैं, और जो सफाई करते हैं, नीची जाति के कहलाते हैं। क्या उसे सामान्य कामकाजी महिला नहीं कह सकते? वह अपना वेतन ले रही है, भीख नहीं।"

व्याख्या समझने की कोशिश में विदेशी अतिथि ने प्रश्नों की जो बौछार की, उससे बचने के लिए, मालकिन के साथ दुभाषिए जी भी कोई छतरी नहीं ढूँढ़ पाए।

❑

चेतना भाटी का जन्म 27 जून, 1957 को भीकनगांव, खरगौन (मध्य प्रदेश) में हुआ। बी. एस-सी. एम. ए. एल-एल. बी. करने वाली चेतना की आठ कृतियां प्रकाशित। आकाशवाणी से नियमित रूप से रचनाओं का प्रसारण। म.प्र. लेखक संघ, भोपाल द्वारा काशीबाई मेहता सम्मान। संप्रति : इंदौर लेखिका संघ की उपाध्यक्ष।

Scanned with CamScanner

इंदु गुप्ता

चींटी

गांव के स्कूल में कक्षा चल रही थी और अध्यापक महोदय बच्चों को चींटी की दिनचर्या के बारे में बता रहे थे, 'चींटी बहुत ही छोटा-सा जीव है, लेकिन वह अहर्निश, अनुशासन-सी मुंह में कुछ उठाए निरन्तर चलती हुई, सदा अपने काम में व्यस्त रहती है। वह कभी इधर-उधर नहीं देखती कि कोई काम कर रहा है या नहीं। सृष्टि में बस एक यही ऐसा जीव है, जो बिना आलस्य दिन-रात इसी प्रकार निरन्तर काम करता रहता है।

''नहीं-नहीं, गुरूजी कोई और भी है, जो बिल्कुल इसी तरह दिन-रात...''

''अच्छाऽऽऽ! तो बताओ, ऐसा जीव और कौन है, जो...'' अध्यापक ने उत्सुकता में भर कर पूछ लिया बच्चे से।

''वो जीव मेरी मां है, गुरूजी!''

ब्रांडेड

''भइया, तरबूज क्या भाव दिया?'' हाथ में छह सौ मिलीलीटर वाली कोल्ड ड्रिंक की बोतल लिये खुले पैकेट से निकालकर चिप्स कुरकुराते हुए सूट-बूट वाले आदमी ने ठेले वाले से दाम पूछा, ''तीस रुपए किलो दिया साब। एक-एक दाना मीठा होगा। कटवा कर चख लो बाबूजी, मीठा हो तो पैसे देना, नहीं तो...'' वह बोलता चला जा रहा था।

''क्या कहा, तीस रुपये किलो, अरे, दिमाग ठीक है तेरा, तरबूज ही तो बेच रहा है या सोना है। पन्द्रह रुपये लगा तो दे दे, नहीं तो..''

Scanned with CamScanner

''पन्द्रह रुपये, क्या बाबू, आपने तो बिल्कुल आधा रेट कर दिया, पच्चीस रुपये तो अपना ही पड़ा है, उस पर खर्चा भाड़ा, फिर कुनबा, इसी से तो...''

''पन्द्रह नहीं तो रहने दे।'' कहकर उसने कोल्ड ड्रिंक की बोतल का ढक्कन खोल कर घूंट लिया तो तरबूज़ वाले ने हिचकिचाते हुए पूछ लिया, ''बुरा न मानें तो आपसे एक बात पूछ लें बाबूजी?''

''हां बोल।''

''वो बाबूजी, इह कोला का बोतल कितने का खरीदे हैं आप?''

''पैंतीस रुपये की।''

''पैंतीस!''

''हां पैंतीस, वही कीमत जो इस पर छपी है, पर तुझे क्या, क्यों पूछ रहा है?''

''अरे बाबूजी, इसके पैसे काहे कम नहीं करवाए आपने, साढ़े सत्रह रुपये या और भी कम। ?''

''क्या बकवास कर रहा है? तेरे तरबूज की तरह यह खेत में नहीं उगता, 'ब्राण्डेड आइटम है, ब्राण्डेड।'' कहकर ब्राण्डेड घूंट भरता वह आगे बढ़ गया। ❑

इन्दु गुप्ता का जन्म नारायणगढ़ (हरियाणा) में 24 अगस्त, 1962 को हुआ। हिंदी, उर्दू और पंजाबी में महारथ हासिल। एक दर्जन से अधिक कृतियां प्रकाशित, जिनमें तीन लघुकथा संग्रह हैं। हरियाणा साहित्य अकादेमी से कई बार पुरस्कृत। फरीदाबाद में राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य।

Scanned with CamScanner

नामदेव

फिर न कहना

भारत के जंगलों में जानवरों की बैठक में यह तय किया गया है कि सभी जानवर इसलिए समान हैं कि सभी जंगल में ही रहते हैं। आधे मांसाहारी हैं तो आधे शाकाहारी और अंतिम सत्य ये है कि सभी प्रकृति में प्राकृतिक रूप से रहते हैं। इन वास्तविकताओं को जानकर बहुत से न्यायप्रिय जानवर बहुत खुश हुए। महसूस किया कि वे ही एकमात्र जीव हैं जो धरती पर समता के भाव से रहते हैं। खरगोश, हिरण, गधे, सियार, बंदर, भालू, शेर, चीता, बाघ, लोमड़ी, लकड़बग्घे आदि इस नये पहलू पर सोचने लग गए। सबने यही महसूस किया। जो भी हो, वो मनुष्यों की तुलना में ज़्यादा ईमानदार और जीववादी हैं और यह वाकई गर्व का विषय है, लेकिन तुरंत ही खरगोश, हिरण, सियार जैसे जानवरों ने इसका प्रतिवाद कर यह सवाल दाग दिया कि ''मनुष्य हमसे श्रेष्ठ हैं, मनुष्यों में कोई भेदभाव नहीं होता। इसलिए हमसे वो श्रेष्ठ हैं।''

गधे और बंदरों ने उनसे पूछ लिया कि उनके पास इस बात के क्या प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि वे मानव आबादी के बीच भी रहते हैं जिससे उनको मनुष्यों की संस्कृति भी मालूम है। ''ये बात ठीक है कि तुम मानव आबादी के बीच रहते हो, लेकिन हम लोग तो सीधा मनुष्यों के साथ ही रहते हैं, अत: उनके चरित्र से हम भलीभांति परिचित हैं'' बंदर और गधे ने कहा। ''अच्छा तो ये बताओ मनुष्यों की सबसे बड़ी चारित्रिक दुर्बलता क्या है'' सियार ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा। ''शायद स्त्रियों को लेकर वो...।'' बंदर और सियार ने कहा, ''अरे नहीं दोस्तो स्त्रियां समस्या नहीं ज़रूरत हैं, उनकी आधी दुनिया है और बहुत से सम्मान भी देते हैं इनको। असल मुद्दा तो वो है जो दुनिया में कहीं

Scanned with CamScanner

और नहीं और वो है छुआछूत। इससे प्रभावित मनुष्यों को अछूत और दलित कहा जाता है। इन्हीं अछूतों पर आजकल लिखने का फैशन चल पड़ा है और खूब लिखा भी जा रहा है।'' सियार ने कहा, ''ये तो ठीक बात है जंगल में मैं भी जानवरों का दर्द बयां करता हूँ उनको वाणी देता हूँ, विचारों को संपादित करता हूँ। इसमें हर्ज क्या है।''

बंदर और गधे ने कहा ''ये अच्छी बात है लेकिन तुम्हारा सरोकार जंगल के प्रति एक ही है परंतु मनुष्यों में अलग-अलग है। वे एक को खुश करने के लिए तो दूसरे के प्रति सहानुभूति वश लिखते हैं और अक्सर उन्हीं के विरुद्ध विचारों को संपादित भी कर देते हैं जिससे समाज आदर्शवादी यथार्थ की ओर उन्मुख हो उठता है। और इस मानवीय जनवादिता से चेतनशील मनुष्य लिखने वाले को हीरो बना देते हैं, और वह हीरो अपने साथ खड़े जन समूह को देखकर इतराता है।'' लेकिन बंदर और गधे जी इसमें आपत्तिजनक क्या है, कोई न कोई तो यह बेड़ा तो उठाएगा ना, सियार ने मुंह बनाते हुए कहा। ''हाँ! कोई न कोई बेड़ा उठाएगा, ये बात ठीक है। लेकिन दु:ख की बात यह है कि अछूत दास्तान में कर्मवीर जैसे कर्मठ और प्रतिभावान सृजक और भी बढ़ गए हैं, परंतु आज उन्हीं में से कुछ सृजक रास्ता भटककर अपनों पर ही हुआं-हुआं कर रहे हैं।''

सरकारी सांड

आलम, अब्दुल, वकील, लाल, रवि, गौरी, आयशा, सबीना ये सभी दोस्त बहुत मजे में पढ़ते हुए अपने भावी जीवन को तराशने में लगे हुए थे। एक दिन कैंटीन में सभी चाय समोसे पर बैठे थे कि तभी उनमें जाति और धर्म को लेकर बहस छिड़ गई। आपसी लगाव, तनाव में तब्दील होने लगा। सवाल यह था कि पढ़ाई पूरी होने के बाद कौन क्या बनेगा? आलम स्वयं दलित मुसलमान था, लेकिन अपने को दलितों से ऊंचा मानता था। अब्दुल अमीर किसान परिवार से था। उसका सपना किसानी करना या किसी तरह रिश्वत दे दवा कर गांव के पास के किसी सरकारी स्कूल में मास्टर बनना था। वकील, लाल और रवि शिक्षक बनना चाहते थे। गौरी अफसर और आयशा आकाशवाणी में उद्घोषिका बनना चाहती थी। बहस में सबने महसूस किया कि रास्ता इतना आसान नहीं है, क्योंकि किसी को धर्म के कारण तो किसी को जाति के कारण दिक्कत आएगी। बात सच भी थी। वैसे इन दोस्तों में शायद ही कभी व्यक्तिगत कटाक्ष होता था, लेकिन उस दिन रिसर्च फेलोशिप में लाल जब पास हो गया और बाकी रह गए तो उनमें से कुछ

Scanned with CamScanner

दोस्तों ने कहा कि उसको तो मिलना ही था, क्योंकि वह एससी है और ये सरकारी सांड होते हैं।

रोचक यह था कि आलम (धोबी दलित) और आयशा (कसाई जाति) जैसे निम्नवर्गीय युवा भी इस जातिगत उपहास में शामिल थे। लाल की इस सफलता के बाद अक्सर वे उसकी अनुपस्थिति में अब व्यक्तिगत छींटाकशी भी करने लगे थे। एक दिन लाल एक प्रतिष्ठित संस्थान में शिक्षक बन गया और अपने विश्वविद्यालय का नायक। एक दिन गौरी और आलम ने लाल से कहा कि सफलता के कुछ सूत्र हमें भी बताओ यार। लाल ने कहा कि देखो भई, सबको अवसर मिला हुआ है। बस, उसको मेहनत से हासिल करने की जरूरत है, लेकिन हम अपने जातीय समुदाय के बंद तहखानों से बाहर नहीं निकल पाते और एक दूसरे से ईर्ष्या करने लगते हैं। और यहीं दूसरे लोग सफल हो जाते हैं। उनके वर्गीय हित पहले होते हैं और हम वर्गीय हित देखते ही नहीं। बहरहाल, लाल की बातों का पता नहीं उन दोनों पर कितना असर हुआ, लेकिन कुछ वर्ष बाद पता चला कि आलम और गौरी ने शादी कर ली और आलम भी सरकारी सेंट्रल स्कूल में अध्यापक हो गया।

❑

नामदेव का जन्म 7 अगस्त, 1971 को हुआ। 'दलित चेतना और स्त्री विमर्श', 'हिंदी कविता : मध्य काल और आधुनिक काल', 'सामाजिक क्रांति के अग्रदूत जोतिबा फुले','हिंदी उपन्यासों के आईने में भारतीय मुसलमान' आदि कई कृतियां प्रकाशित। संप्रति: किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली में एसोसिएट प्रोफेसर।

Scanned with CamScanner